NEWSLETTER

शनिवार, 16 दिसंबर 2023 | वॉल्यूम - 76

Weekly cotton bales market | Weekly cotton arrival | Important News

बारिश से किसानों को राहत, कपास और सोयाबीन की कीमतों में और गिरावट

GOLD : 62077
SILVER : 74415
CRUDE OIL : 6010

"अनेक संकटों से सूती कताई मिलों की हालत ख़राब"

सूती वस्त्रों का निर्यात लगभग 18 महीनों से सुस्त पड़ा हुआ है, अप्रैल-सितंबर के दौरान सूती धागे के निर्यात में सालाना आधार पर 56 प्रतिशत की गिरावट आई है, बढ़ती लागत के कारण भारतीय यार्न वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त खो रहा है, बिजली की लागत बढ़ गई है, महीन धागे के लिए आयात शुल्क 11 प्रतिशत पर जारी है। यार्न की किस्में मजबूत और लचीली बैलेंस शीट आने वाले वर्ष में आशा का वादा करती हैं

सूती कपड़ा उद्योग, खासकर कताई मिलों की मुश्किलें जल्द ही कम होने की संभावना नहीं है। इसके विपरीत, एक ओर कम मांग और प्राप्तियों तथा दूसरी ओर स्थिर कपास की कीमतों के बीच मिलों की लाभप्रदता में गिरावट जारी रहेगी।

साउथ इंडिया मिल्स एसोसिएशन के अनुसार, देश में कताई क्षमता का लगभग 55 प्रतिशत हिस्सा रखने वाली दक्षिणी मिलें लगभग 18 महीनों से लंबी मंदी का सामना कर रही हैं।

हालाँकि, अखिल भारतीय आधार पर, कपड़ा शिपमेंट में साल-दर-साल (वर्ष-दर-वर्ष) अप्रैल-अक्टूबर 2023 के बीच मामूली गिरावट आई। इसके भीतर, इस अवधि के दौरान परिधान निर्यात में लगभग 14-15 प्रतिशत की गिरावट आई, जिससे चिंता बढ़ गई, खासकर क्योंकि पिछले वर्ष की अवधि (2021 की तुलना में अक्टूबर 2022) में जोरदार उछाल आया था।

और क्या, भारत का सूती धागे का निर्यात वित्त वर्ष 2021-22 की समान अवधि की तुलना में अप्रैल-सितंबर के दौरान 56 प्रतिशत कम था। कारण बाहरी और आंतरिक दोनों हैं।

भारत का आधा यार्न निर्यात (मात्रा के संदर्भ में) चीन और बांग्लादेश को होता है। गौतम बताते हैं, "वित्त वर्ष 2023 में चीनी अर्थव्यवस्था के बंद होने और वित्त वर्ष 2023 की शुरुआत में भारतीय यार्न की कम लागत प्रतिस्पर्धात्मकता के कारण (चूंकि घरेलू कपास की कीमतें अंतरराष्ट्रीय कीमतों को पार कर गईं, जिससे भारतीय यार्न वैश्विक बाजार में कम प्रतिस्पर्धी हो गया), निर्यात मात्रा में गिरावट आई।" शाही, निदेशक, क्रिसिल रेटिंग्स लिमिटेड।

इसके अलावा, वस्त्रों की वैश्विक मांग, विशेष रूप से अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ जैसी उच्च खपत वाली अर्थव्यवस्थाओं से कमजोर रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद मध्य-पूर्व में एक और युद्ध ने भी आपूर्ति-श्रृंखला को जटिल बना दिया है और देशों में पूंजीगत व्यय, नौकरियों और खपत को प्रभावित किया है।

भारत कोई अपवाद नहीं रहा है. मुद्रास्फीति और उच्च ब्याज दरों के साथ-साथ नौकरी की अनिश्चितता आंशिक रूप से यही कारण है कि पिछले छह महीनों में विवेकाधीन खर्च, जिसमें परिधान भी शामिल है, में कमी आई है। हाल के त्योहारी सीजन के दौरान रेडीमेड की घरेलू मांग में उम्मीद से कम बढ़ोतरी ने मिलों के लिए चिंताएं बढ़ा दी हैं।

ध्यान दें कि उद्योग कपास और महंगे मानव निर्मित फाइबर और फिलामेंट यार्न पर लगाए गए 11 प्रतिशत आयात शुल्क को हटाने पर जोर दे रहा है, जो कपड़े, परिधान और मेड-अप जैसे अंतिम-उपयोगकर्ता वस्त्रों को और अधिक खराब कर रहा है। वैश्विक बाज़ारों में महँगा और कम प्रतिस्पर्धी।

सूती धागे को महंगा बनाने में अन्य लागतें भी जुड़ रही हैं। हाल ही में, SIMA ने बताया कि बिजली दरों में भारी वृद्धि से उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, यह देखते हुए कि कुल विनिर्माण लागत में बिजली की हिस्सेदारी 40 प्रतिशत से अधिक है।

ऐसे कठिन समय में, कपास सीजन FY2024 के लिए कपास उत्पादन के अनुमान में गिरावट अच्छी खबर नहीं है। शुरुआती अनुमान लगभग 310 लाख गांठ कपास उत्पादन की ओर इशारा करते हैं, जो पिछले साल के लगभग 337 लाख गांठ से कम है। (कपास की एक गांठ 170 किलोग्राम की होती है)। इससे कपास की कीमतों को और गिरने से रोका जा सकता है, जो बिजली और अन्य लागतों के साथ-साथ यार्न की कीमतों को ऊंचा रख सकता है।

क्रिसिल के अनुसार, जिसने लगभग 88 यार्न स्पिनरों का विश्लेषण किया, सूती धागा स्पिनरों की परिचालन लाभप्रदता पिछले वित्तीय वर्ष के 10-10.5 प्रतिशत से 250-350 आधार अंक गिरकर इस वित्तीय वर्ष में 7-8 प्रतिशत के दशक के निचले स्तर पर आ जाएगी। (एक आधार अंक एक प्रतिशत अंक का सौवां हिस्सा है)। कपास और धागे के बीच सिकुड़ता फैलाव, इन्वेंट्री हानि, कमजोर डाउनस्ट्रीम मांग प्रमुख कारण हैं। रिपोर्ट में कहा गया है, "कम प्राप्तियों के कारण राजस्व में भी 13-15 प्रतिशत की गिरावट आएगी, भले ही पिछले वित्तीय वर्ष के निम्न आधार पर इस वित्तीय वर्ष में मात्रा 10-12 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है।

हालाँकि, स्पिनरों को जो मदद मिल रही है, वह है पिछले तीन वर्षों में अपनी बैलेंस शीट को कम करने के बाद उनका अपेक्षाकृत मजबूत ब्याज कवर अनुपात। अधिकांश कंपनियों ने पूंजीगत व्यय में भी कटौती की है। फिर भी, यह केवल वैश्विक बाजारों में मांग में बढ़ोतरी है, जो भारत के कपड़ा निर्यात के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जो गंभीर परिदृश्य को हल्का करने में मदद करेगा।

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates. CLICK HERE

FOR MORE INFORMATION
CONTACT - +91 - 91119 77771

कॉटन मार्केट की साप्ताहिक हलचल पर एक नजर

SMART INFO SERVICES

CALL : 91119 77771 - 5

WEEKLY CHART 16.12.2023

ICE COTTON			
MONTH	08.12.23	15.12.23	WEEKLY CHANGE
MARCH	81.44	79.93	-1.51
MAY	82.04	80.69	-1.35
JULY	82.45	81.17	-1.28
MCX (COTTON)			
JAN	57200	56680	-520
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1592	1555.5	-36.5
NCDEX (COCUD KHAL)			
DEC	2945	2889	-56
JAN	2846	2736	-110
FEB	2831	2730	-101
SMART INFO SERVICE		CALL : 91119 77775	
CURRENCY ($)			
INDIAN (Rupee)	83.39	83.00	-0.39
PAK (Pakistani Rupee)	284.062	283.498	-0.564
CNY (Chinese yuan)	7.16271	7.11713	-0.04558
BRAZIL (Real)	4.91330	4.93809	0.02479
AUSTRALIAN Dollar	1.52021	1.49319	-0.02702
MALAYSIAN RINGGITS	4.66621	4.67198	0.00577
COTLOOK "A" INDEX	92.70	90.95	-1.75
BRAZIL COTTON INDEX	79.55	79.6	0.05
USDA SPOT RATE	77.44	75.86	-1.58
MCX SPOT RATE	55660	55180	-480
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	17000	17000	0
GOLD ($)	2020.70	2033.70	13
SILVER ($)	23.295	24.172	0.877
CRUDE ($)	71.26	71.79	0.53

दिसंबर माह के दूसरे सप्ताह इंटरनेशल कॉटन मार्केट में गिरावट देखने को मिली |

इंटरनेशनल कॉटन एक्सचेंज के मार्च 24, मई, 24 और जुलाई 24 माह के लिए कॉटन के भाव क्रमशः 1.51, 1.35 और 1.28 सेंट तक भाव गिरे।

भारतीय बाजार में मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (MCX) पर कॉटन के दाम में गिरावट देखी गई। जनवरी माह के सौदे के भाव में 520 रूपए प्रति कैंडी की गिरावट आयी |

एनसीडीइएक्स पर कपास के भाव 36.50 रूपए प्रति 20 किलो तक गिरे, वही खल के भाव में क्रमश दिसंबर, जनवरी और फरवरी माह में 56, 110 और 101 रूपए प्रति क्विंटल की गिरावट हुई।

अन्य देशों के कॉटन मार्केट पर नजर करें तो कॉटलुक "ए" इंडेक्स में गिरावट देखी गई , यूएसडीए स्पॉट रेट 1.58 सेंट घटा और एमसीएक्स स्पॉट रेट 480 रूपए प्रति कैंडी गिरा, वही ब्राजील कॉटन इंडेक्स पर 0.05 अंक की बढ़त दर्ज की गई है।

देश भर के प्रमुख कपास उत्पादक राज्यों में इस सप्ताह कपास की आवक

SMART INFO SERVICES

ALL INDIA COTTON WEEKLY ARRIVAL

CALL : 91119 77775

STATE	11.12.23	12.12.23	13.12.24	14.12.24	15.12.24	16.12.24
PUNJAB	2,000	2,000	2,000	3,500	4,000	4,000
HARYANA	7,500	8,000	8,000	7,500	7,000	6,500
UPPER RAJASTHAN	12,000	14,000	12,000	14,000	14,000	12,000
LOWER RAJASTHAN	5,000	5,000	6,000	7,000	7,500	7,500
NORTH ZONE	26,500	29,000	28,000	32,000	32,500	30,000
GUJRAT	38,000	38,000	38,000	38,000	38,000	38,000
MADHYA PRADESH	16,000	14,000	15,000	15,000	16,000	12,000
MAHARASHTRA	33,000	33,000	32,000	35,000	40,000	40,000
CENTRAL ZONE	87,000	85,000	85,000	88,000	94,000	90,000
KARNATAKA	20,000	17,000	17,000	18,000	18,000	18,000
ANDHRA PRADESH	8,000	9,000	10,000	8,000	10,000	9,000
TELANGANA	25,000	25,000	35,000	35,000	40,000	40,000
TAMILNADU	-	-	-	-	-	-
SOUTH ZONE	53,000	51,000	62,000	61,000	68,000	67,000
ODISHA	500	500	700	700	900	900
TOTAL	167,000	165,500	175,700	181,700	195,400	187,900
ARRIVAL IN 170 Kg.						

बारिश से किसानों को राहत, कपास और सोयाबीन की कीमतों में और गिरावट

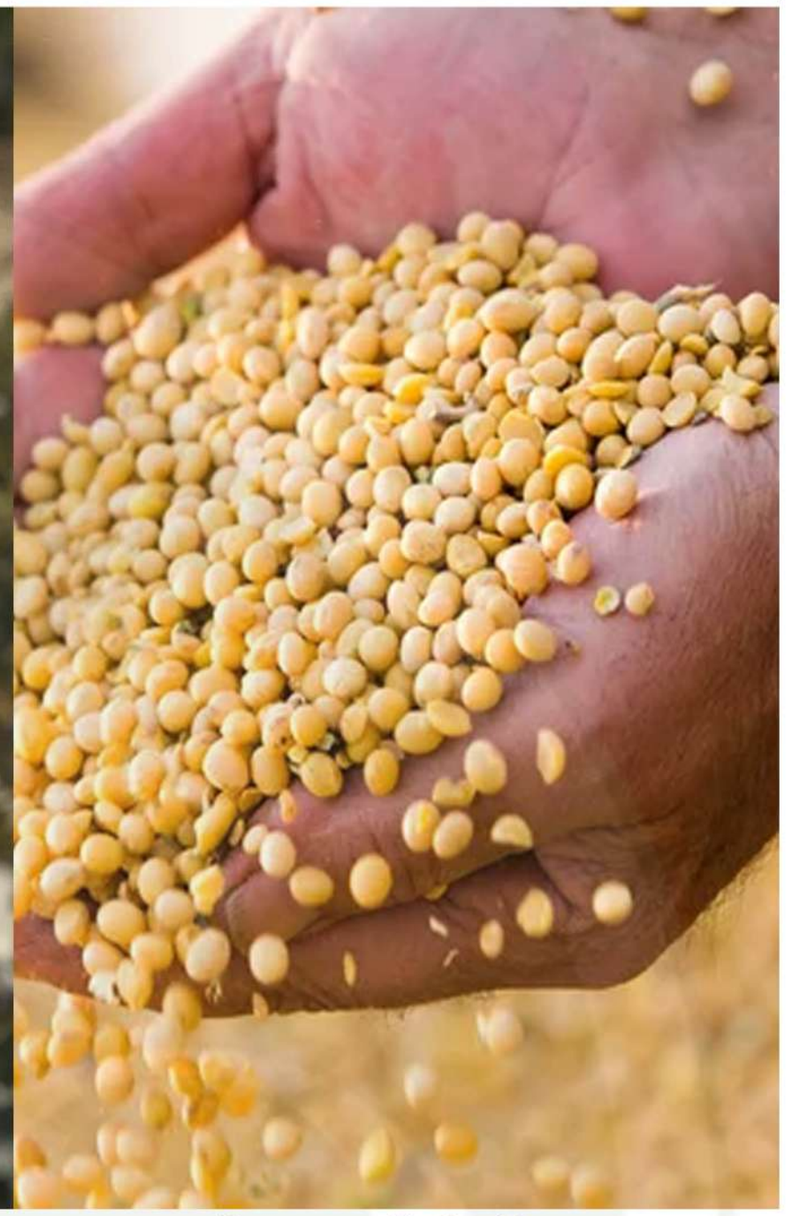

बाज़ारों में ज़्यादातर आपूर्ति बारिश से ख़राब हुए कपास और सोयाबीन की है। व्यापारियों का कहना है कि उचित औसत गुणवत्ता (एफएक्यू) से नीचे गिरने के कारण क्षतिग्रस्त उपज सरकारी एजेंसियों द्वारा एमएसपी खरीद के लिए योग्य नहीं है।

पिछले सप्ताह तक, कपास की दरें, जिसमें बेमौसम बारिश के कारण नमी की मात्रा अधिक थी, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) ₹7,020 प्रति क्विंटल से नीचे चली गई थी, यहां तक कि लंबे स्टेपल ग्रेड के लिए भी। बाजार सूत्रों का कहना है कि अब, यहां तक कि सबसे अच्छे ग्रेड के कपास - 8% तक की नमी के स्वीकार्य स्तर के साथ - या तो एमएसपी से नीचे या बमुश्किल ₹20 से ₹30 के स्तर से ऊपर दर प्राप्त कर रहा है।

अच्छे लंबे रेशे वाले कपास की दरें ₹7,000 से ₹7,050 प्रति क्विंटल के बीच हैं। हालांकि, बाजार में आने वाली अधिकांश कपास बारिश से खराब हो गई है। बाजार सूत्रों का कहना है कि इस उपज का दाम ₹6,000 से ₹6,500 प्रति क्विंटल से अधिक नहीं मिल रहा है।

यवतमाल के महलगांव में एक जिनर और कपास किसान विजय निचल का कहना है कि बाजार बदरंग कपास से भर गया है जो बारिश के कारण क्षतिग्रस्त हो गया है। उनका कहना है कि कम तापमान आगे बीजकोष बनने से रोक सकता है।

सोयाबीन का एमएसपी ₹4,600 प्रति क्विंटल है। हालाँकि, बारिश के कारण बाज़ारों में अधिकांश आपूर्ति निम्न श्रेणी की है। कलामना में कृषि उपज बाजार समिति (एपीएमसी) यार्ड के एक व्यापारी ने कहा, सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले सोयाबीन की कीमत ₹4,800 प्रति क्विंटल है, लेकिन बाजार में मुख्य रूप से सोयाबीन को नुकसान हुआ है। हालांकि, वानी में सोयाबीन का भाव लगभग ₹5,500 प्रति क्विंटल है, लेकिन किसानों के पास शायद ही कोई उपज बची है, एक व्यापारी ने कहा।

यवतमाल के घाटनजी के किसान तुकाराम जाधव ने कहा कि वह लगभग 3 क्विंटल सोयाबीन की कटाई कर सके, जबकि बाकी फसल को बचाया नहीं जा सका। उन्हें उपज के लिए लगभग ₹4,700 प्रति क्विंटल मिलने की उम्मीद है। उनका कहना है कि उनके पास जो कपास है, उसे ₹6,500 प्रति क्विंटल से ज्यादा नहीं मिलेगा।

कपास व्यापारी मनीष शाह ने कहा कि लिंट की दरें ₹28,000 से घटकर ₹25,000 प्रति गांठ हो गई हैं। अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भी मंदी है. व्यापारी मांग कर रहे हैं कि सरकार को कपास पर रिवर्स चार्ज मैकेनिज्म (आरसीएम) को खत्म करना चाहिए, जिससे वे किसानों के लिए कीमतें बढ़ाने में सक्षम हो सकते हैं।

आरसीएम जीएसटी शासन के तहत सामग्री की खरीद पर देय कर है। यह कपास सहित चुनिंदा वस्तुओं पर लागू है। आम तौर पर, जीएसटी केवल वस्तुओं की बिक्री पर देय होता है, लेकिन कुछ वस्तुएं आरसीएम के अंतर्गत आती हैं।

TOP 5 NEWS OF THE WEEK

महाराष्ट्र ने नई कपड़ा नीति में बदलाव के लिए पावरलूम पर 'अध्ययन समूह' की घोषणा की

महाराष्ट्र सरकार ने बुधवार को राज्य में पावरलूम उद्योग के मुद्दों के समाधान के लिए समर्पित एक अध्ययन समूह स्थापित करने की घोषणा की। समूह का प्राथमिक उद्देश्य हाल ही में लॉन्च की गई कपड़ा नीति में संशोधन का प्रस्ताव करना है, जो विशेष रूप से पावरलूम क्षेत्र को लाभ पहुंचाने के लिए बनाई गई है।

कपास में फसल क्षति को रोकने के लिए पीबीडब्ल्यू कीट और उपलब्ध समाधानों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सहयोगात्मक सरकारी-निजी दृष्टिकोण की आवश्यकता है

इस बात पर जोर देते हुए कि उत्तरी भारत में कपास की फसल में देखे जाने वाले पिंक बॉलवर्म (पीबीडब्ल्यू) कीट के मामले में फसल के नुकसान को रोकने के लिए समय पर हस्तक्षेप महत्वपूर्ण है, एक उद्योग विशेषज्ञ ने जागरूकता बढ़ाने के लिए एक सहयोगी सरकारी-निजी दृष्टिकोण का सुझाव दिया है क्योंकि कीट के मामले में समाधान उपलब्ध है। समय रहते पता चल जाता है.

'कपास पर आयात शुल्क कपड़ा क्षेत्र में अवसरों को प्रभावित करता है'

सुपिमा के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी मार्क लेवकोविट्ज़ ने कहा, भारत में कपास पर आयात शुल्क का भारत में सुपिमा कपास के शिपमेंट पर प्रभाव पड़ा है। कॉटन यूएसए द्वारा आयोजित कॉटन डे 2023 कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए सोमवार को कोयंबटूर में आए श्री लेवकोविट्ज़ ने बताया कि यह शुल्क उन ब्रांडों के लिए हतोत्साहित करने वाला है जो भारत में सुपिमा कॉटन से बने उत्पाद खरीदना चाहते हैं।

कपास का मौसम शुरू, क्षेत्र के लिए चुनौतियाँ

गुजरात कपड़ा उद्योग पिछले एक साल से अधिक समय से कम मांग का अनुभव कर रहा है। नया कपास सीज़न बहुत कम उम्मीद लेकर आया है क्योंकि कपड़ा इकाइयाँ पूरी क्षमता से काम करने के लिए संघर्ष कर रही हैं। जहां कताई मिलें 70% क्षमता पर चल रही हैं, वहीं जिनिंग इकाइयां केवल 40% क्षमता पर चल रही हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय कपास की ऊंची कीमत उद्योग के निर्यात कारोबार में बाधा बन रही है।

अनेक संकटों से सूती कताई मिलों की हालत ख़राब।

सूती वस्त्रों का निर्यात लगभग 18 महीनों से सुस्त पड़ा हुआ है, अप्रैल-सितंबर के दौरान सूती धागे के निर्यात में सालाना आधार पर 56 प्रतिशत की गिरावट आई है, बढ़ती लागत के कारण भारतीय यार्न वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त खो रहा है, बिजली की लागत बढ़ गई है, महीन धागे के लिए आयात शुल्क 11 प्रतिशत पर जारी है। यार्न की किस्में मजबूत और लचीली बैलेंस शीट आने वाले वर्ष में आशा का वादा करती हैं

कॉटन फिजिकल मार्केट दिसंबर माह के दूसरे सप्ताह कॉटन के भाव में गिरावट वाला माहौल रहा।

यह सप्ताह कॉटन फिजिकल मार्केट के लिए बढ़त वाला रहा। नार्थ, साउथ और सेंट्रल तीनो झोनो में कही जगह गिरावट देखी गई ।

नार्थ झोन में पंजाब में 25 रुपए प्रति मंड की बढ़त देखी गई। जबकि अपर राजस्थान में 25 रुपए प्रति मंड की गिरावट देखने को मिली, हरयाणा का मार्केट स्थिर रहा।

वही सेंट्रल झोन में मध्य प्रदेश और मध्यप्रदेश में 200 रुपए प्रति खण्डी की गिरावट देखने को मिली | वही गुजरात स्थिर रहा।

साउथ झोन मार्केट में भी गिरावट जारी रही। ओडिशा, कर्नाटक और तेलंगाना में क्रमशः 600, 500 और 700 रुपय प्रति खण्डी की गिरावट देखी गई। आंध्र प्रदेश में सबसे ज्यादा 1000 रुपय कैंडी की गिरावट हुई।

SMART INFO SERVICES
india.smartinfo@gmail.com
Call : 91119 77775

DATE: 16.12.2023

WEEKLY COTTON BALES MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	11.12.23		16.12.23		CHANGE
		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	5,350	5,425	5,350	5,450	25
HARYANA	27.5/28	5,300	5,300	5,300	5,300	0
UPER RAJASTHAN	28	5,000	5,425	4,950	5,400	-25
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	55,000	55,200	55,000	55,200	0
MADHYA PRADESH	29	54,500	55,000	54,300	54,800	-200
MAHARASHTRA	29+ vid.	54,600	55,100	54,400	54,900	-200
SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	55,900	56,000	55,300	55,400	-600
KARNATAKA	29 mm	55,200	55,500	54,500	55,000	-500
ANDHRA PRADESH	29.5/30 mm	53,800	55,500	52,500	54,500	-1,000
TELANGANA	29.5/30 mm 78-80 RD	55,800	56,200	55,200	55,500	-700
NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.						
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy						

NEWSLETTER

Saturday, 16 December 2023 | Volume - 76

Weekly cotton bales market | Weekly cotton arrival | Important News

Relief to farmers from rain, further decline in cotton and soybean prices

GOLD : 62077
SILVER : 74415
CRUDE OIL : 6010

"The condition of cotton spinning mills deteriorated due to many problems"

Cotton textile exports have been sluggish for almost 18 months, cotton yarn exports have declined by 56 per cent year-on-year during April-September, Indian yarn is losing its competitive edge in global markets due to rising costs, power shortage Costs have increased, with import duty for fine yarn continuing at 11 per cent. Yarn Varieties Strong and flexible balance sheet promises hope in the year ahead

The troubles of the cotton textile industry, especially the spinning mills, are not likely to ease any time soon. On the contrary, the profitability of mills will continue to decline amid low demand and realizations on one hand and stable cotton prices on the other.

According to the South India Mills Association, southern mills, which account for about 55 per cent of the spinning capacity in the country, have been facing a prolonged slowdown for almost 18 months.

However, on an all-India basis, textile shipments declined marginally year-on-year (y-o-y) between April-October 2023. Within this, apparel exports declined by about 14-15 per cent during the period, raising concerns, especially as there was a strong surge in the year-ago period (October 2022 compared to 2021).

What's more, India's cotton yarn exports were down 56 per cent during April-September compared to the same period in FY 2021-22. The reasons are both external and internal.

Half of India's yarn exports (in terms of volume) are to China and Bangladesh. Gautam explains, "Due to the shutdown of the Chinese economy in FY2023 and lower cost competitiveness of Indian yarn in early FY2023 (as domestic cotton prices crossed international prices, making Indian yarn less competitive in the global market) Done), export volumes declined." Shahi, Director, CRISIL Ratings Ltd.

Additionally, global demand for textiles has remained weak, especially from high-consumption economies such as the US, UK and EU. Another war in the Middle East following the Russia-Ukraine war has also complicated supply-chains and affected capital spending, jobs and consumption across countries.

India has been no exception. Job uncertainty along with inflation and high interest rates are partly why discretionary spending, including apparel, has declined over the past six months. Lower-than-expected growth in domestic demand for ready-mades during the recent festive season has raised concerns for mills.

Note that the industry is pushing for removal of the 11 per cent import duty imposed on cotton and expensive man-made fibers and filament yarns, which is further worsening end-user textiles like dresses, apparel and made-ups. Expensive and less competitive in global markets.

Other costs are also added to make cotton yarn expensive. Recently, SIMA reported that a steep increase in electricity tariffs has increased production costs. This is no surprise, given that electricity accounts for more than 40 percent of total manufacturing costs.

In such difficult times, the decline in cotton production estimates for cotton season FY2024 is not good news. Initial estimates point to cotton production at around 310 lakh bales, down from last year's around 337 lakh bales. (A bale of cotton weighs 170 kg). This may prevent cotton prices from falling further, which, along with electricity and other costs, could keep yarn prices high.

According to CRISIL, which analyzed around 88 yarn spinners, the operating profitability of cotton yarn spinners will fall by 250-350 basis points to a decade low of 7-8 per cent this financial year from 10-10.5 per cent last financial year. . (One basis point is one hundredth of one percentage point). Shrinking spread among cotton and yarn, inventory loss, weak downstream demand are the major reasons. "Revenue will also decline by 13-15 per cent due to lower receipts, even though volumes are expected to grow by 10-12 per cent this financial year on the low base of last financial year," the report said.

However, what is helping the spinners is their relatively strong interest cover ratio after shrinking their balance sheet over the last three years. Most companies have also cut capital expenditure. Yet, it is only a pick-up in demand in global markets, which is so important for India's textile exports, that will help lighten the grim scenario.

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates. CLICK HERE

FOR MORE INFORMATION
CONTACT - +91 - 91119 77771

A look at the weekly movement of the cotton market

SMART INFO SERVICES

CALL : 91119 77771 - 5

WEEKLY CHART 16.12.2023

ICE COTTON			
MONTH	08.12.23	15.12.23	WEEKLY CHANGE
MARCH	81.44	79.93	-1.51
MAY	82.04	80.69	-1.35
JULY	82.45	81.17	-1.28
MCX (COTTON)			
JAN	57200	56680	-520
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1592	1555.5	-36.5
NCDEX (COCUD KHAL)			
DEC	2945	2889	-56
JAN	2846	2736	-110
FEB	2831	2730	-101
SMART INFO SERVICE		CALL : 91119 77775	
CURRENCY ($)			
INDIAN (Rupee)	83.39	83.00	-0.39
PAK (Pakistani Rupee)	284.062	283.498	-0.564
CNY (Chinese yuan)	7.16271	7.11713	-0.04558
BRAZIL (Real)	4.91330	4.93809	0.02479
AUSTRALIAN Dollar	1.52021	1.49319	-0.02702
MALAYSIAN RINGGITS	4.66621	4.67198	0.00577
COTLOOK "A" INDEX	92.70	90.95	-1.75
BRAZIL COTTON INDEX	79.55	79.6	0.05
USDA SPOT RATE	77.44	75.86	-1.58
MCX SPOT RATE	55660	55180	-480
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	17000	17000	0
GOLD ($)	2020.70	2033.70	13
SILVER ($)	23.295	24.172	0.877
CRUDE ($)	71.26	71.79	0.53

Growth was seen in the international cotton market in the first week of December.

Cotton prices for the months of March 24, May, 24 and July on the International Cotton Exchange increased by 2.02, 1.92 and 1.68 cents respectively.

A decline was seen in the prices of cotton on Multi Commodity Exchange (MCX) in the Indian market. The deal price for the month of January fell by Rs 80 per candy.

On NCDEX, cotton prices increased by Rs 30 per 20 kg, while the price of cotton fell by Rs 45 and Rs 63 per quintal in the months of January and February respectively.

If we look at the cotton market of other countries, an increase was seen in the Cotlook "A" index, USDA spot rate increased by 2.41 cents and MCX spot rate fell by Rs 140 per tranche, while an increase of 0.02 points was recorded on the Brazilian Cotton Index.

Cotton arrival this week in major cotton producing states across the country

SMART INFO SERVICES

ALL INDIA COTTON WEEKLY ARRIVAL

CALL : 91119 77775

STATE	11.12.23	12.12.23	13.12.24	14.12.24	15.12.24	16.12.24
PUNJAB	2,000	2,000	2,000	3,500	4,000	4,000
HARYANA	7,500	8,000	8,000	7,500	7,000	6,500
UPPER RAJASTHAN	12,000	14,000	12,000	14,000	14,000	12,000
LOWER RAJASTHAN	5,000	5,000	6,000	7,000	7,500	7,500
NORTH ZONE	26,500	29,000	28,000	32,000	32,500	30,000
GUJRAT	38,000	38,000	38,000	38,000	38,000	38,000
MADHYA PRADESH	16,000	14,000	15,000	15,000	16,000	12,000
MAHARASHTRA	33,000	33,000	32,000	35,000	40,000	40,000
CENTRAL ZONE	87,000	85,000	85,000	88,000	94,000	90,000
KARNATAKA	20,000	17,000	17,000	18,000	18,000	18,000
ANDHRA PRADESH	8,000	9,000	10,000	8,000	10,000	9,000
TELANGANA	25,000	25,000	35,000	35,000	40,000	40,000
TAMILNADU	-	-	-	-	-	-
SOUTH ZONE	53,000	51,000	62,000	61,000	68,000	67,000
ODISHA	500	500	700	700	900	900
TOTAL	167,000	165,500	175,700	181,700	195,400	187,900
ARRIVAL IN 170 Kg.						

Relief to farmers from rain, further decline in cotton and soybean prices

Most of the supply in the markets is cotton and soybean damaged by rain. Traders say damaged produce falling below Fair Average Quality (FAQ) is not eligible for MSP procurement by government agencies.

By last week, rates of cotton, which had high moisture content due to unseasonal rains, had fallen below the minimum support price (MSP) of ₹7,020 per quintal, even for the long staple grade. Now, even the best grade cotton – with acceptable moisture levels of up to 8% – is fetching rates either below the MSP or barely above the ₹20 to ₹30 level, market sources say.

Rates of good long staple cotton range between ₹7,000 to ₹7,050 per quintal. However, most of the cotton arriving in the market has been damaged by rain. Market sources say that the price of this produce is not more than ₹ 6,000 to ₹ 6,500 per quintal.

Vijay Nichal, a ginner and cotton farmer in Mahalgaon, Yavatmal, says the market is flooded with discolored cotton which has been damaged due to rain. He says low temperatures may prevent further boll formation.

The MSP of soybean is ₹4,600 per quintal. However, due to the rains most of the supply in the markets is of low grade. The best quality soybean is priced at ₹4,800 per quintal, but mainly soybean has suffered losses in the market, said a trader at the Agricultural Produce Market Committee (APMC) yard in Kalamana. Although the price of soybean in Wani is around ₹5,500 per quintal, farmers are left with hardly any produce, said a trader.

Tukaram Jadhav, a farmer from Ghatanji in Yavatmal, said he could harvest about 3 quintals of soybean, while the rest of the crop could not be saved. He expects to get around ₹4,700 per quintal for the produce. He says that the cotton he has will not fetch more than ₹6,500 per quintal.

Cotton trader Manish Shah said lint rates have dropped from ₹28,000 to ₹25,000 per bale. There is recession in the international market also. Traders are demanding that the government should scrap the reverse charge mechanism (RCM) on cotton, which would enable them to increase prices for farmers.

RCM is the tax payable on purchase of materials under GST regime. This is applicable to select commodities including cotton. Generally, GST is payable only on sale of goods, but some goods come under RCM.

TOP 5 NEWS OF THE WEEK

Maharashtra announces 'study group' on power loom for changes in new textile policy
The Maharashtra government on Wednesday announced setting up a study group dedicated to addressing the issues of the power loom industry in the state. The primary objective of the group is to propose amendments to the recently launched textile policy, which is specifically designed to benefit the powerloom sector.

Collaborative public-private approach is needed to increase awareness about PBW pest and available solutions to prevent crop damage in cotton
Emphasizing that timely intervention is important to prevent crop loss in case of Pink Bollworm (PBW) pest seen in cotton crop in Northern India, an industry expert has joined hands with a collaborative government agency to raise awareness. -Personal approach is suggested as solutions are available in case of pests. It becomes known in time.

'Import duty on cotton affects opportunities in textile sector'
Mark Levkowitz, president and chief executive officer of Supima, said import duties on cotton in India have had an impact on shipments of Supima cotton to India. Mr Levkowitz, who was in Coimbatore on Monday to participate in the Cotton Day 2023 event organized by Cotton USA, said the duty is a disincentive for brands that want to buy products made from Supima cotton in India.

Cotton season begins, challenges for the sector
Gujarat textile industry has been experiencing low demand for more than a year. The new cotton season has brought little hope as textile units are struggling to operate at full capacity. While spinning mills are running at 70% capacity, ginning units are running at only 40% capacity. The high price of Indian cotton in the international market is hindering the export business of the industry.

The condition of cotton spinning mills deteriorated due to many problems.
Cotton textile exports have been sluggish for almost 18 months, cotton yarn exports have declined by 56 per cent year-on-year during April-September, Indian yarn is losing its competitive edge in global markets due to rising costs, power shortage Costs have increased, with import duty for fine yarn continuing at 11 per cent. Yarn Varieties Strong and flexible balance sheet promises hope in the year ahead

Cotton Physical Market: There was a declining trend in cotton prices in the second week of December.

This week was a positive one for the cotton physical market. A decline was seen at some places in all three zones, North, South and Central.

An increase of Rs 25 per maund was seen in Punjab in the North Zone. While a decline of Rs 25 per maund was seen in Upper Rajasthan, the market of Haryana remained stable.

In the Central Zone, a decline of Rs 200 per khandi was seen in Madhya Pradesh and Madhya Pradesh. Whereas Gujarat remained stable.
600, 500 and 700 per khandi was seen in Odisha, Karnataka and Telangana respectively. Maximum fall of Rs 1000 candy occurred in Andhra Pradesh.

SMART INFO SERVICES
india.smartinfo@gmail.com
Call : 91119 77775

DATE: 16.12.2023

WEEKLY COTTON BALES MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	11.12.23		16.12.23		CHANGE
		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	5,350	5,425	5,350	5,450	25
HARYANA	27.5/28	5,300	5,300	5,300	5,300	0
UPER RAJASTHAN	28	5,000	5,425	4,950	5,400	-25
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	55,000	55,200	55,000	55,200	0
MADHYA PRADESH	29	54,500	55,000	54,300	54,800	-200
MAHARASHTRA	29+ vid.	54,600	55,100	54,400	54,900	-200
SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	55,900	56,000	55,300	55,400	-600
KARNATAKA	29 mm	55,200	55,500	54,500	55,000	-500
ANDHRA PRADESH	29.5/30 mm	53,800	55,500	52,500	54,500	-1,000
TELANGANA	29.5/30 mm 78-80 RD	55,800	56,200	55,200	55,500	-700
NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.						
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy						